अध्यक्ष महोदय : आपने बहुत अधिक समय ले लिया है।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : अधिक समय का क्या मतलब है ? मैं कह रहा हूं : उन समाचार पत्रों के विरुद्ध कार्यवाही की जाए जो भड़काने वाली अथवा साम्प्रदायिक बातें लिखते हैं किन्तु पूर्व-सैंसरशिप समाप्त कर देनी चाहिए···

अध्यक्ष महोदय : सभी सरकार से यह कहते हैं कि उचित समय पर उचित कार्यवाही की जाए अब मैं अपने आप कुछ करने का प्रयत्न कर रहा हूं

श्री इन्द्रजीत गुप्त : मैं आपसे भी अनुरोध कर रहा हूं। यह आपका राज्य है। क्या आपको इसकी चिंता नहीं है ? कुछ कदम उचित समय पर ही उठाने चाहिए मैं कहता हूं कि बाहर और सारे देश में लोग वाद-विवाद सुन रहे हैं। सिख भी सुन रहे हैं। वे जानना चाहते हैं कि सरकार क्या कदम उठाने पर विचार कर रही है। आखिर अब सब कुछ समाप्त हो गया है और अब हमें देखना है कि सामान्य वातावरण कैसे बनाना है, हालांकि निश्चित रूप से इसमें बहुत समय लगेगा।

विदेश धन्यवाद, महोदय। मंत्री

प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गान्धी) मेरा विचार था कि विषय और स्थिति की गंभीरता को देखते हुए विपक्ष में बैठे हमारे माननीय भिन्न इस वाद—विवाद में, निन्दा और झूठे आरोपों से दूर रहेंगे तथा मैं सोचती थी कि पूर्वाग्रह उनकी टिप्पणियों को रंग नहीं देंगे। स्पष्ट है कि मैं यह बात सभी के लिए नहीं कह रही हूं, परन्तु यह सच है कि कुछ लोगों ने अभियोग लगाये हैं और वे कोई नये अभियोग नहीं है। उनका उत्तर—कुछेक का इस सदन में और कुछ का अन्य अवसरों पर दिया जा चुका है। परन्तु इस चर्चा का समग्र उद्देश्य-कुछ वक्ताओं से क्षमा—याचना सहित-अब यह लगता है, और यह हम सदन के बाहर भी देख रहे हैं कि लोगों की विचारधारा में भ्रम उत्पन्न करने के लिए आवश्यक मामलों से ध्यान हटाकर पूर्णतया' गौण मामलों पर ध्यान केन्द्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

कुछ वक्ताओं ने चुनावों के बारे में बहुत कुछ कहा है। महोदय हमें चुनावों से कोई भय नहीं हैं। दुर्भाग्य से, विपक्षी दल और ग्रुप और सदस्य भी—मुझे यह तो पता नहीं हैं कि इसे एक ग्रुप कहा जाता है या कुछ और—इससे भयभीत हैं। मुझे और सरकार को केवल चुनावों में लाभ उठाने के हेतु संकट पैदा करने का आरोप एक चूर्णित तर्क हैं जिसका उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है।

कुछ माननीय सदस्य विचलित करने वाली खामोशी के बारे में बोले हैं। विचलित करने वाली खामोशी श्वेत-पत्र में नहीं हैं, और यह खामोशी उन लोगों ने साधी हुई थी जो कि आज सिख समुदाय के हितों के संरक्षक की भूमिका निभा रहे हैं। मैंने जो कुछ टिप्पणियां सुनी हैं वे उत्तरदायित्व से दूर हैं- मैं सभा में उपस्थित ही थी, परन्तु मैं अपने कक्ष से प्रत्येक भाषण को सुन रही थी। श्री इन्द्रजीत गुप्त ने अभी- अभी कहा है कि हम अकालियों को ही सिखों का प्रतिविधि समझते हैं। महोदय, आप स्वयं सोच सकते हैं कि क्या इसका कोई आधार है ! 1980 के चुनावों

में, जब कि पंजाब के अकाली दल सत्ता में था तो चुनाव किसने जीता। कांग्रेस पार्टी ने चुनाव जीता। और हिन्दुओं ने चुनाव जीता। सिखों और हिन्दुओं ने कांग्रेस को मत दिया। भला हम यह कैसे कह सकते हैं कि केवल अकाली दल ही सिखों का प्रतिनिधि है।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : क्योंकि आप केवल उनसे बातचीत करते है और उनसे ही निपटते हैं।

श्री मती इन्दिरा गान्धी : हम उनसे निपटे और अन्य सभी सिख और हिन्दू संगठनों से मिली हूं जो कि हरियाणा और पंजाब से मुझसे मिलने आए थे। उनमें से अधिकांश मेरे दल के थे और कुछ अन्य दलों के। यह तो मुझे पता नहीं कि कोई साम्यवादी सिख आया कि नहीं। परन्तु मेरी उस मार्क्सवादी सिख नेता से अवश्य बातचीत हुई थी जो कि अकालियों के अत्यन्त निकट था और जो यह कहता था कि वे सिखों की आवाज है।

अत: हमें ऐसे मामलों से बचकर नही चलना चाहिये। कांग्रेस सदैव हर प्रकार की साम्प्रदायिकता के विरुद्ध लड़ी है-और यदि आप 1966 से बाद के दस्तावेजों को देखें तो आप पायेंगे कि मैं साम्प्रदायवादियों के विरुद्ध किस प्रकार बोली हूं और किस प्रकार मैं आज भी सभी प्रकार की साम्प्रदायिकता और किसी प्रकार के उग्रवाद के विरुद्ध हूं। आज साम्प्रदायिकता के नये आयाम बन गये हैं और इसे रूढ़िवाद कहा जाता है। यहां तक कि जो देश रूढ़िवाद के जनक समझें जाते हैं, वे इसके बारे में चिन्तित हैं और इस पर काबू पाने का प्रयास कर रहे हैं। क्योंकि वे वहां पर उसके दुष्प्रभावों का पता लगा रहे हैं, परन्तु हमारे देश में हमें इसे कठोर सघर्ष करना पड़ेगा क्यों कि हमारा समाज कहीं अधिक कमजोर हैं। मैं स्पष्ट रुप से कहूं तो यह रुढ़िवाद किसी एक समाज में नहीं है और मैं सिख रूढ़िवाद का उल्लेख नहीं कर रही हूं अपितु हिन्दू रूढ़िवाद मुस्लिम रुढ़िवाद और यहां तक ईसाई रूढ़िवाद की बात भी कर रही हूं। हरेक धर्म यह अनुभव करता हैं कि इसे अतिवादी रवैया अपनाना चाहिये और जो ऐसा नहीं करते हैं उसे असली सिख नहीं समझा जाता है, क्यों कि वे अकाली दल के सदस्य नहीं है। मुसलमानों का क्या कहना है? वे कहते हैं कि जो मुसलमान कांग्रेस में है या साम्यवादी हैं, वे असली मुसलमान नहीं हैं क्योंकि वे मुस्लिम लोग या ऐसे किसी संगठन में नहीं हैं। हमारे दल को यही तो भुगतना पड़ रहा हैं, क्योंकि हमने अपने धर्म निरपेक्षता के आदर्श को बनाये रखा हैं, क्योंकि हमने कुछेक व्यापक राष्ट्रीय लक्ष्यों को बनाये रखा है और स्वयं को किसी प्रकार की संकुचित विचारधारा से नहीं जोड़ा है। हम किसी भी प्रकार की वैचारिक संकीर्णता, धर्म के क्षेत्र में अन्यथा और किसी क्षेत्र में किसी प्रकार की संकीर्णता से लड़ते ही रहेंगे। यही तो मुख्य भारतीय परम्परा हैं। कांग्रेस साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ी और आज यह नवीन उपनिवेशवाद के विरुद्ध लड़ रही है।

किसी बात को तोड़-मरोड़ कर कहने से कोई लाभ नही है, क्यों कि हम देशों या लोगों के नाम नही लेते है। मैं किसी ग्रुप या आपमें से किसी का नाम नहीं लेती हू। मैं प्राय: किसी का नाम नही लेती हूं, चाहे कोई मुझे गाली दे या मेरी प्रशंसा करे। क्योंकि माननीय सदस्य अभी अभी बोले थे तो मैंने उनका नाम ले लिया। मेरे विचार से हमारे इस रिकार्ड के लिए हमें कोई चुनौती नहीं दे सकता है। स्थल सेनाध्यक्ष अमरीका गये है या एक मन्त्री महोदय पाकिस्तान गये

है, क्यों कि हम सहयोग का क्षेत्र ढूढ़ने का प्रयास करते है और उसको विस्तृत करने का प्रयास करते है और आरंभ से ही हमारी विदेश नीति का यह आधार रहा हैं। इसका यह आशय नहीं हैं कि हम यह नहीं जानते हैं कि वे लोग क्या कर रहे हैं। इसका यह आशय नहीं है कि हमें उन्हें उनकी कारतूतों के बारे में नहीं बताते हैं।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : बताना चाहिये।

श्री मती इन्दिरा गांधी : हमें न केवल 'चाहिये' बल्कि हमने किया है। मुझे बताया गया हैं कि विदेशों में रहने वाले लोगों ने यह देखा है और टिप्पणी की हैं कि यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसने यही बात विश्व की अनेक राजधानियों में कही है। मैं जिस किसी भी विशेष देश में गई मैंने उनके विचारों से हां में हां नहीं मिलाई है।

श्री कृष्ण चन्द्र हाल्दर : आप स्वयं अपनी प्रशंसा कर रही है।

श्रीमती इन्दिरा गान्धी : आपका 'स्वयं' से क्या तात्पर्य है ? मैंने वही कहा है जिसे अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई है। आज हम इस लड़ाई को जारी रखे हुए हैं। वास्तव में, हमारी कुछ समस्याएं इसलिए उठ खड़ी हुई हैं। क्योंकि हम इस लड़ाई को जारी रखे हुए हैं। वहाँ बैठे माननीय सदस्य और अन्यों को इस बात की जानकारी होनी चाहिये। और अपनी समस्त गलतियों के साथ, मानव होने के नाते हम अनेक गलतियां करते हैं—हम भी अपनी गलतियों को छुपाते नहीं है स्वाभाविक है कि हम उन्हे उनका प्रदर्शन करना नहीं चाहते है, यद्यपि भारत अपनी कमियों और खामियों तथा अपने अभावों, गरीबी, सब किसी का किसी भी अन्य देश से कहीं अधिक प्रदर्शन करता लगता है। परन्तु फिर भी हम देश को हर संभव दिशा में आगे ले गये है। मैं 'हम' का उल्लेख करती हूं। जब तो मैं स्वयं का उल्लेख नहीं कर रही होती हूं। मैं इस संसद का उल्लेख भी नहीं कर रही हूं। मैं तो भारत के लोगों का उल्लेख कर रही हूं।

हमारी उत्पादकता को बढ़ाने वाले तो भारतीय किसान, भारतीय कामगार, भारतीय वैज्ञानिक और भातीय प्रौद्योगिकीविद है। विदेशी आक्रमणों से भारतीय सेना ने ही हमारी सीमाओं की रक्षा की है।अत: जब मैं 'हम' कहती हूं तो मेरा तात्पर्य इन सभी लोगों से है। कभी—कभी विपक्ष यह भूल जाता हैं। वे उस हर बात पर विश्वास करना चाहते हैं, जो कि हमारे विरोधी कहते हैं बजाय इसके जो कुछ सरकार कहती है। हम यह सरकार की ओर से नहीं कह रहे हैं लेकिन सरकार के कहने में दम होता है क्योंकि सरकार ही तो दिशा प्रदान करती है।

हम कुछ लोगों और कुछ देशों की तरह यहां—वहां घूमते नहीं फिरते हैं। हमने स्वयं को एक अटल मार्ग पर डाला है जो कि सर्वोत्तम प्राचीन को, जो कुछ हम सर्वोत्तम आधुनिक में से समझते है, उसके साथ मिलाने का सर्वाधिक कठिनमार्ग हैं, जो कि हम हर प्रकार सबसे भीषण मुसीबतों और अड़चनों से सामना करते हुए करते हैं, जिसमें मैं यह और कहूंगी कि हमारे कुछ भिन्न जो विपक्ष में बैठे हैं उसने योगदान करते रहते हैं, हमने उन्हें नही पैदा किया है। भारत ने न केवल अपनी जनता के बारे में बोला है और बोलता है, अपितु अगणित लाखों के बारे में,

विश्व जनसंख्या के बहुसंख्यकों के बारे में बोलता है और अन्य लोगों की सहायता करने के लिए तो हमारी एक कदम लीक से हटकर चलने की चाह रही है।

महोदय, प्रो० चक्रवर्ती ने कल अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा था कि कांग्रेस ने देश पर इतने वर्ष शासन करने के बाद—वह यह भूल गये कि बीच में तीन वर्ष किसी और ने भी शासन किया था-अत: देश की एकता बनाये रखना उसका कर्त्तव्य था। इसका यह आशय प्रतीत होता है कि राष्ट्रीय एकता एक दल की समस्या है। क्या उनके कथन का यही अर्थ है ? इस ढंग से यह बात उठाई गई थी और इस प्रकार ही यह सब कुछ हुआ।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती (कलकत्ता दक्षिण) : महोदय, आपने अभी अभी कहा है कि सरकार नीति निर्धारित करती है और देश की एकता को बनाए रखना आपका प्राथमिक कर्त्तव्य है।

श्रीमती इन्दिरा गान्धी : राष्ट्रीय एकता एक राष्ट्रीय समस्या हैं और यह सभी भारतीय नागरिकों का उत्तरदायित्व है। मैंने जब माननीय सदस्यों का भाषण सुना तो मैंने यह समझा कि शायद अन्य दलों को आग लगाकर हाथ सेकने और जब आग बेकाबू हो जाए तो भाग खड़े होने की छूट है ?

जहां तक मेरा और मेरे दल का सम्बन्ध है, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता हमारा सर्वोच्च लक्ष्य है और उसके रास्ते में न ही तो चुनावों को और न ही किसी अन्य बात को आने दिया जायेगा। जो कुछ पंजाब में हो रहा था वह न केवल निर्दोष लोगों के विरुद्ध करता या निष्ठुर हिंसा की कहानी थी, अपितु विभाजन ताकतों को प्रोत्साहित करने के लिए आन्तरिक और बाहरी ताकतों का एक जुट होकर, सोच समझकर—संगठित प्रयास था। यह हमारे समक्ष एक चुनौती थी। जो एक सदस्य मध्यहान भोजन से पहले बोले थे, उनका कहना था कि जब कि और स्थानों में हिंसा होने पर सेना नहीं भेजी गई तो, पंजाब में ही सैनिक कार्यवाही क्यों की गई। यद्यपि अन्य सीमावर्ती राज्यों में जो कुछ हुआ है उसमें कुछ सम्बन्ध तो है, परन्तु पंजाब की स्थिति पूर्णतया भिन्न है।

विदेशी हाथ होने का भी उल्लेख हुआ है। यह बात पहले भी अनेक सदस्यों ने उठाई थी। हमसे साक्ष्य देने के लिए कहा जाता है। हमसे देशों और व्यक्तियों के नाम लेने आदि के लिए कहा जाता है। हम कोई न्यायालय में थोड़े ही बैठे हैं, हत तो ऐतिहासिक ताकतों और आन्दोलनों पर विचार कर रहे है। हम तो अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे है। अपने स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान क्या हमारे पास कोई कवचित साक्ष्य था कि हमारे यहाँ सम्प्रदायिक दंगों का आह्वान किया जा रहा है ?

किन्तु हमें यह प्राप्त नहीं हो सका। किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात हमें पता चला कि उनमें से कुछ जातीय दंगे जानबूझ कर भड़काए गए थे। वास्तव में, जैसाकि मैंने पहले भी कहा है, मैं महारानी एलिजाबेथ के राजाभिषेक के समय एक उच्चाधिकारी से मिली थी जिसने मुझे इस प्रकार के जातीय दंगे में अपनी भूमिका के बारे में बताया था।

प्रो मधु दण्डवते : वे देश पर शासन कर रहे थे।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : बात वह नहीं है। बात यह है कि उपनिवेदवादी, साम्राज्यवादी शक्तियों के जाने के बाद भी क्या हुआ, क्योंकि हम सभी जानते हैं कि अनेक औद्योगिक देश विकासशील देशों के बारे में क्या सोचते हैं. हम सभी दूसरे देशों में घटित हुई घटनाओं के बारे में जानते हैं। इस समय तो हम केवल अनुमान लगा सकते हैं। हम इस बात का प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सकते कि कोई कौन सा कार्य कर रहा है। हम तो केवल इस बात से निर्णय कर सकते हैं कि अन्य देशों में क्या हो रहा है, अन्य देशों में क्या हुआ है।

इस प्रकार की घटनाओं की पुष्टि की गई है। हम में से अनेक को इस प्रकार का पूर्वानुभव था और मैंने इसके बारे में दूसरे सदन में बताया था तो मुझे हूट किया गया और जब मैंने यह बात अपने दल की बैठक में कही तो मेरे दल के सदस्यों ने ऐसा किया। तत्पश्चात् एक पुस्तक का प्रकाशन हुआ और जो कुछ हुआ उसका प्रमाण मिल गया।

अत: हम केवल अपने राजनीतिक अनुभव से शेष विश्व में हो रही घटनाओं से यह अनुमान लगा सकते हैं। हमें समकालीन विश्व शक्तियों के स्वरूप को पहचानना चाहिए। अन्य देशों में विदेशी एजेन्सियों की गतिविधियां अच्छी प्रकार अभिलेखित की गई हैं। हमारे समक्ष यह प्रश्न है : इन विदेशी शक्तियों की भूमिका के प्रति सन्देह व्यक्त कर जिनका हित साधन किया जा रहा है ?

एक माननीय सदस्य : पंजाब के बारे में बताइए।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : पंजाब अब इन सब गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है। मैं अब इन मामलों के बारे में कह रही हूं।

यह गठबंधन इस समय क्यों हुआ है ? जातिवाद और नव सामाम्राज्यवाद के बीच गहरा सम्बन्ध है। भारत थोड़े से लोकतांत्रिक एवं धर्म निरपेक्ष राज्यों में से एक है।

भारत ऐसे थोड़े से विकासशील देशों में से है जहाँ आयोजना से जिसकी विश्व के कतिपय भागों में निन्दा की गई थी। एक मजबूत स्वतन्त्र तथा आत्म निर्भर राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था स्थापित करने में सफलता प्राप्त की है। भारत शान्ति और निःशस्त्रीकरण के आन्दोलन में अग्रणी है। भारत अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र में वर्तमान समान सम्बन्धों के पुनर्गठन के लिए अपनी स्पष्ट और बुलन्द आवाज उठाता रहा है।

भारत गुट निरपेक्षवाद का प्रतीक हैं और यह इसकी एक शकारात्मक शक्ति हैं। खुले आक्रमण, खुले और गुप्त ढंग से डाले गए दबावों से हमारी स्वतन्त्रता को नष्ट करने के प्रयास असफल हो गए हैं। क्योंकि अपनी परम्पराओं के अनुरूप कांग्रेस स्वतन्त्रोत्तर काल में शक्तिशाली ताकतों के दबाव में नहीं आया है।

अत: भारत को कमजोर बनाने का एक अन्य रास्ता ढूंढ़ निकाला गया है। पंजाब में हुई घटनाओं का यही सही महत्व है। इसीलिए सीमावर्ती राज्य पंजाब जिसकी अर्थ-व्यवस्था बड़ी ठोस थी, में आन्दोलन हुआ। इसलिए भारत के अन्य भागों में, चाहे उसके कारण विभिन्न प्रकार

के हों, फिर भी इनमें कुछ सम्बन्ध हैं। क्या हम अपने पड़ोसिओं को हथियारों से लेस करने और पंजाब में गड़बड़ी के अद्भुत संयोग की अपेक्षा कर सकते हैं? क्या जम्मू और काश्मीर में और त्रिपुरा में तथा पूर्वोत्तर सीमा में पृथकतावादी शक्तियों के पुन: उठने के संयोग की उपेक्षा कर सकते हैं? वास्तव में न केवल त्रिपुरा में, बल्कि समूचे पूर्वोत्तर में यह समस्या बनी हुई है।

जैसाकि मैंने कहा है कि कुछ लोग अपनी सरकार के अलावा सभी की नेकनीयती पर विश्वास कर लेते हैं। उनके लिए इन घटनाओं का इन सब के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होगा किंतु उनके अलावा कोई भी देख सकता हैं कि इन घटनाओं से परस्पर समीप का सम्बन्ध है

अब, मुख्य बात यह है कि क्या सेना को स्वर्ण मन्दिर में भेजने की आवश्यकता थी और हम उनकी माँगों को कैसे ले रहे थे? एक नाम का उल्लेख किया गया हैं और जिसका नाम लिया गया है उसे अब सिखों का नेता माना जा रहा है। मैं इस बात में नहीं जाना चाहती। इस आरोप का उत्तर दे दिया गया है। वहां किसी व्यक्ति और कांग्रेस में किसी प्रकार का कोई सम्बध नहीं था। यदि समाचार पत्र अथवा कुछ लोग यह कहते हैं कि हमारे दो संसद सदस्य उस व्यक्ति के कारण चुनाव जीते थे तो मैं यह कहती हूं कि इस आरोप में किसी प्रकार की कोई सच्चाई नहीं है।

(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : नहीं, कुछ भी रिकार्ड में नहीं जा रहा। क्या आप चुप रहने का कष्ट करेंगे?

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मामले पर कल और आज भी विचार किया गया है और मैं इस पर पुन: कुछ कहने जा रही हूं। किन्तु यह स्पष्ट बता दिया गया है कि जो भी माननीय सदस्य ने कहा हैं सही नहीं है। अकालियों में स्वयं मैं आन्तरिक झगड़े थे। हम जानते हैं कि वे वहां पहले भी थे, वे वार्ता के दौरान भी दिखाई दे रहे थे। और यह भी सम्भव हैं, मैं इसके बारे में पूरी तरह से निश्चित नहीं हूं, किन्तु मैंने यह सुना है कि उसके कुछ उम्मीदवार उनके अपने चुनावों में कुछ अन्य अकालियों द्वारा हरा दिए गए थे, अत: बदला लेने के लिए उसने इस उम्मीदवार को हराने का निर्णय किया। इसका हमसे कोई सम्बन्ध नहीं है। खैर, प्रश्न मांगों के बारे में है।

(व्यवधान)

श्री के. नीलालोहितसदन नाडार : (खड़े हुए)

अध्यक्ष महोदय : यदि आप बोलना चाहते है तो मैं आपको इसके लिए अवसर दूंगा। यदि आपने ऐसा किया तो आपसे सदन से बाहर चले जाने के लिए कहूंगा। बैठ जाइए। आप वहां मत देखिए।

(व्यवधान)

(5.00 म. प.)

श्रीमती इन्दिरा गांधी : आपने इन बातों का बास्तविक कारण बता दिया है, आपने इस

**कार्यवाही-वृतान्त में शामिल नहीं किया गया।